ऑडिओ कैसेट नं. 444 कलकत्ता ता.22.1.2000

प्राइमरी नॉलेज

ओमशान्ति

परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद हैं।

सुप्रीम सोल बाप ही आकर राजयोग सिखाता है। जिस राजयोग से एक ही जन्म में अनेकों जन्मों की राजाई प्राप्त होती है। वो स्कूल, कॉलेजेस तो मनुष्यों के बनाये हुए हैं। उनमें इंजीनियरिंग पढ़ाई जाती है, डॉक्टरी पढ़ाई जाती है; लेकिन एक जन्म के लिए पढ़ाई जाती है। यह सुप्रीम सोल बाप आकर एक ही जन्म में अनेक जन्मों की राजाई का वर्सा देते हैं। वह राजाई कोई मनुष्यमात्र नहीं दे सकता। दुनियाँ में इतने बड़े–बड़े राजाएँ हुए, छोटे राजाएँ हुए उन राजाओं को कंट्रोलिंग पावर किसने दी? कब दी? ये गीता का भगवान निराकार परमपिता–परमात्मा शिव ही आकर इस सृष्टि पर राजयोग सिखाता है। जिस राजयोग से अनेक जन्मों की राजाई प्राप्त होती है। डाक्टर नहीं बनाता है। इंजीनियर नहीं बनाता है। ये तो अल्पकाल की प्राप्तियाँ हैं। जिस्मानी प्राप्तियाँ हैं। सुप्रीम सोल बाप तो आकर रूह को वर्सा देता है। रूहानी वारिसदार बनाता है। रूहानी वर्सा है आत्मा की शक्ति। सर्वशक्तिवान बाप आकर आत्माओं में इतनी शक्ति भरता है कि एक ही जन्म में अनेकों जन्मों की राजाई की शूटिंग, रिहर्सल इस पुरुषोत्तम संगमयुग में आकर कराता है। एक तरफ़ दुनियाँ में ऐटमिक एनर्जी का निर्माण होता है, जिसके द्वारा हर–हर, बम–बम का प्रैक्टिकल नारा गूँजता है। दूसरी ओर गीता का भगवान परमपिता–परमात्मा इस सृष्टि पर आकर गुप्त पाण्डवों के द्वारा गुप्त स्थापना का कार्य चलाता है। वो स्थापना का कार्य भी योगबल से सम्पन्न होता है। ये कोई जिस्म का योग नहीं है। ये रूह का योग है। रूह मतलब आत्मा। आत्मा अर्थात् मन–बुद्धि की पावर। जिस मन–बुद्धि की पावर के लिए गीता में महावाक्य आया है, मनुष्य जब शरीर छोड़े तो "भ्रुवोर्मध्ये प्राणं आवेश्य सम्यक्" (गीता 8/10) भृकुटि के मध्य में प्राण रूप जो आत्मा है उसका ध्यान करे। जिस भृकुटि के मध्य में ज्योतिबिंदु आत्मा विराजमान है। जिसकी यादगार में स्मृति का टीका लगाया जाता है। आत्मा यहाँ भृकुटि में टिकी हुई है। इंदिरा गाँधी को गोली मारने वाले ने छाती में सत्ताईस गोलियाँ दाग दीं और उनके जीवित रहने की सम्भावना बनी रही। अगर वह जानता होता कि आत्मा मस्तक में निवास करती है, उत्तम अंग में निवास करती है, उस उत्तम अंग में इस शरीर रूपी राज्य का बैठने वाला राजा भृकुटि के मध्य से सारे शरीर को कंट्रोल करता है तो एक ही गोली में काम तमाम कर देता; लेकिन वह नहीं जानता था। ऐसे बहुत से आततायी हैं; क्योंकि आततायी वर्ग को आत्मा की नॉलेज जल्दी नहीं मिलती।

परमात्मा बाप आते हैं तो राजयोग सिखाते हैं। राजयोग की प्राप्ति बाहुबलियों को नहीं होती। दुनियाँ का कोई भी बड़े–ते–बड़ा बाहुबली क्यों न हुआ हो, हिस्ट्री में प्रसिद्ध ही क्यों न रहा हो, नेपोलियन बोनापार्ट, हिटलर जैसा सारे संसार में राजाई प्राप्त करने का आकांक्षी क्यों न रहा हो; लेकिन सारे संसार में राजाई प्राप्त नहीं कर सकता। ये सिर्फ़ राजयोग बल ही है जिस योगबल से बाहुबल का प्रयोग किये बिना वायब्रेशन को कंट्रोल करके सारी सृष्टि के ऊपर शांति की स्थापना वह शांति देवा बाप आकर करता है। एक तरफ़ आत्माओं को, राजयोगियों को राजयोग से शांति के ऐसे वायब्रेशन्स मिलते हैं कि वे अशांति की दुनियाँ से अपनी मन–बुद्धि को परे ले जाकर रख देते हैं। शरीर छोड़ने के बाद नहीं। शरीर में रह करके ही आत्मा इस बात का अनुभव करे कि शांति क्या चीज़ है! दुःखों से मुक्त होने के बाद ही शांति की अनुभूति होती है।

तामसी, दुःखी आत्मा तन से, धन से, सम्बंधियों से, समाज से, शासन से, दुनियाँ के वायब्रेशन्स से अशांत होती है। ऐसी अशांत और दुःखी आत्मा को, दुःखों से भरी–पूरी ह्युमिनिटी को शांति का संदेश देने के लिए सुप्रीम सोल बाप हर चौथे युग कलियुग के अंत–कल्पांत में आता है। इसलिए उसका एक नाम है –"कल्पान्तकारी" चतुर्युगी की समाप्ति करने वाला। जैसे और भी अल्पकाल के ड्रामा होते हैं। तीन/चार सीन होते हैं। ऐसे ये सृष्टि रूपी ड्रामा में ये तीन/चार सीन हैं। सतयुग– सबसे ऊँचा युग। त्रेतायुग– सेकन्डरी। द्वापरयुग– थर्ड क्लास, थर्ड क्लास सुख होता जाता है। कलियुग, जिसमें फोर्थ क्लास सुख रह जाता है। सुख नाम मात्र का, इंद्रियों का अल्पकाल का सुख रह जाता है। क्योंकि आत्मा में सुख भोगने की पावर ही नहीं होती और कलियुग का अंत आते–आते क्षणभंगुर सुख रह जाता है। एक/दो सेकिण्ड का शारीरिक अनुभव, शारीरिक मिलन, ज़्यादा से ज़्यादा दो/पाँच मिनिट के शारीरिक मिलन के आनंद की अनुभूति कर पाता है और उसके बाद मनुष्यमात्र निस्तेज होने का अनुभव करता है। ये जिस्मानियत का सुख, पाँच तत्वों का सुख, जड़ प्रकृति के द्वारा मिला हुआ सुख, तामसी प्रकृति का सुख अति अल्पकाल का होता है। उस जड़त्व को कंट्रोल करने वाला, प्रकृति को कंट्रोल करने वाला, नेचर को थामने वाला प्रकृतिपति

शिवबाप, विश्वपति पिता में क्रिश्चियन्स के "एडम" में, मुसलमानों के "आदम" में, हिंदुओं के "आदिदेव" में, जैनियों के "आदिनाथ" में प्रवेश करता है; क्योंकि उस सुप्रीम सोल को अपना शरीर नहीं होता। वह तो "सदाशिव" है। सदैव ज्ञान स्वरूप है। इसलिए वह इस सृष्टि पर आते हुए भी, शरीर में प्रवेश करते हुए भी जैसा गीता में लिखा है "प्रवेष्टुम्" मैं प्रवेश करने योग्य हूँ। शरीर में आने के बावजूद भी उसका कोई पाप कर्म और पुण्य कर्म नहीं बनता। वह तुरीया सोल है। परमपिता है। जो भी मनुष्य आत्माएँ हैं, पशुओं की आत्माएँ हैं, कीड़े–मकोड़ों की आत्माएँ हैं वह सब आत्माओं का पिता है; लेकिन पशु–पक्षियों और कीड़े–मकोड़ों की आत्माएँ इस सृष्टि पर मनुष्यों की तरह जन्म–मरण के चक्र में तो आती हैं; परन्तु मनुष्य आत्मा सर्वोपरि मानी गई है। मनुष्य का जन्म दुर्लभ कहा जाता है, शास्त्रों में भी विख्यात है। मनुष्य कहा ही तब जाता है जब मनु अर्थात् ब्रह्मा, मनन–चिंतन करने वाला हो। ऐसा; "मनु" इस सृष्टि पर प्रैक्टिकल रूप में प्रत्यक्ष होता है।

ऐसे नहीं कि ब्रह्मा कोई ऊपर सूक्ष्मवतन में होगा। सारी दुनियाँ में, हर छोटे–बड़े देश में ब्रह्मा के द्वारा स्थापन किए हुए ब्रह्माकुमारी विद्यालय स्थापन हो जाते हैं। ब्रह्मा कहो, मनु कहो उस मनु के द्वारा निकली हुई जो ज्ञान की उच्छवास है, जिसे "वेद वाणी" कहा जाता है। विद् मतलब "जानकारी"। वेद जानकारी का नाम है। अज्ञानता का नाम नहीं है। ब्रह्मा के मुख से जो ज्ञान का उच्छवास निकलता है, जो वाणी निकलती है उस वेद वाणी से जो ब्राह्मण सृष्टि है, असली ब्रह्मा की डाइरैक्ट औलाद वह पहले–पहले प्रभावित होती है। शास्त्रों में लिखा हुआ है– ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण निकले। अब मुख में कोई मशीन थोड़े ही रखी हुई है जिसमें से ब्राह्मण निकल पड़ेंगे या भुजाओं से क्षत्रिय निकले। ये तो सिर्फ कवि की कविता है। चित्रकारों ने भाव भंगिमा से भरपूर होकर जो चित्र तैयार किये उसकी भाषा को प्रत्येक मनुष्य नहीं समझ सकता। जो मनन–चिंतन करने वाला वर्ग है वही समझ सकता है। ऐसे मनन–चिंतन करने वाले मनीषी जो मनु की डाइरैक्ट औलाद बनते हैं वे हर धर्म में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ आत्माएँ मौजूद होती हैं। जब इस दुनियाँ में ऐटमिक एनर्जी का निर्माण हो जाता है तो हर धर्म से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं को राजयोग सिखाने के लिए वह परमपिता–परमात्मा इस सृष्टि पर उदित हो जाता है। किसमें? आदम/ एडम/ आदिदेव/आदिनाथ में। हर धर्म में उस नाम की साम्यता है। नाम काम के आधार पर पड़ता है। जिसने इस सृष्टि पर आकर आदि में सृष्टि का प्रैक्टिकल में निर्माण किया। ऐसे नहीं कि सृष्टि नहीं थी। सृष्टि तो थी। मानवीय सृष्टि में हर धर्म जड़त्व को पाया हुआ था। धर्म का अर्थ है– 'धारणा'। दिव्य गुणों की धारणा। दिव्य गुणों के स्थान पर जब हर धर्म में अधर्म छा जाता है, तब परमपिता–परमात्मा उन अधर्मों को, अधर्मियों को नष्ट करने के लिए इस सृष्टि पर उदित होता है।

वास्तव में इस सृष्टि वृक्ष का बीज है– एडम/ आदम/आदिदेव। उस ह्युमिनिटी के फादर में सुप्रीम सोल शिव, जो कभी जन्म–मरण के चक्र में नहीं आता डाइरैक्ट मुकर्रर रूप में प्रवेश करता है और प्रवेश करके उसका नाम रखता है 'मनु'। मनन–चिंतन करने वालों में सर्वोपरि है। उसे मनु कहो, प्रजापिता ब्रह्मा कहो। उसकी औलाद को मनुष्य कहा जाता है। उन मनुष्यों में कैटेगरीज बनती हैं। जो सतयुग आदि में जन्म लेने वाली मनुष्य आत्माएँ हैं वे सोलह कला सम्पूर्ण देवताएँ कही जाती हैं। शास्त्रों में लिखा है– सतयुग में नारायण का राज्य था। सब देवताओं के बीच में एक नारायण का स्वरूप ही ऐसा है जिसकी शास्त्रों में कोई बुराई नहीं की गई है। सभी देवताओं की बुराई की गई है। शास्त्रों में नारायण की कोई ग्लानि नहीं की गई है। तो जरूर सोलह कला सम्पूर्ण का पार्ट बजाया होगा। सर्व गुण संपन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण अहिंसक, मर्यादा पुरुषोत्तम का पार्ट बजाया होगा। वो मर्यादा पुरुषोत्तम देवताएँ सतयुग में होते हैं। उस युग का नाम ही है सतयुग। असत् का नाम–निशान नहीं रहता। सच्चा पातशाह सुप्रीम सोल आकर उस युग की स्थापना करता है। इस सृष्टि रूपी मकान को नया बनाता है और पुराने सृष्टि रूपी मकान को "हर–हर बम–बम" के उद्‌घोष वाली ऐटमिक एनर्जी से नष्ट करा देता है। सतयुग में जो ह्युमिनिटी होती है वो सर्वोपरि मनुष्य की जाति है जिसको कहा जाता है– देवता। सतयुग में अनेक जन्म लेते–लेते उनकी पावर थोड़ी घटती है। त्रेता में जाकर चौदह कलाएँ रह जाती हैं। चौदह कलाओं में सेमी देवता बन जाते हैं। उनको सम्पूर्ण देवता नहीं कहेंगें। आत्मा की पावर घटने से जन्म दर ज़्यादा बढ़ जाती है। जैसे कोई बीज होता है, पहली बार बोया जाता है तो ज्यादा फलदायी होता है; क्योंकि पहली बार के बीज में ज्यादा पावर होती है और जब एक फ़सल पैदा होने के बाद उसी बीज की वैराइटी को दुबारा बोया जाता है तो उसकी पावर कम हो जाती है। ऐसे ही परमात्मा शिव ने आकर आत्मा रूपी जिस आदि सनातन अश्वत्थ वृक्ष की, सात्विक ह्युमिनिटी की सतयुग आदि में स्थापना की थी वो देवताओं की जनरेशन समाप्त हो जाती है और त्रेता में चौदह कला संपूर्ण सेमी देवताओं की जनरेशन शुरू होती है; क्योंकि आत्मा की पावर क्षीण हो जाती है। जनसंख्या बढ़कर करोड़ों की तादाद में पहुँच जाती है।

जब ड्रामा का तीसरा सीन शुरू होता है, जिसे कहते हैं– द्वापुर, तब दो–दो राज्य शुरू हो जाते हैं, दो–दो मतें शुरू हो जाती हैं, दो–दो कुल स्थापन हो जाते हैं। ऐसे द्वैत फैलाने वाली आत्माएँ इस सृष्टि पर आकर जन्म लेती हैं।

जिनके लिए गीता में कहा गया है "मूढ़ा जन्मनि जन्मनि" (गीता 16/20) वे मूढ़ मनुष्य आत्माएँ जो सतयुग–त्रेता में राम–कृष्ण की दुनियाँ में स्वर्ग के सुख नहीं भोग पातीं, ऐसा श्रेष्ठ पुरुषार्थ नहीं कर पातीं, वे द्वैत की दुनियाँ में आकर जन्म लेती हैं। उनके संग के रंग में आने से देवात्माएँ भी नीचे गिरते हैं।

आज से ढाई हज़ार वर्ष पूर्व इस सृष्टि पर दूसरे–दूसरे धर्मों का आना आरम्भ हुआ। सबसे पहले इब्राहीम आए। उन्होंने इस्लाम धर्म की स्थापना की। बाद में महात्मा बुद्ध आए। उन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की। द्वैत में तीसरा मत और आ गया। आज से 2000 वर्ष पूर्व क्राइस्ट आए, योरोपिय देशों में क्रिश्चियन धर्म की स्थापना की। ये सब बाद के आने वाले द्वैतवादी धर्म पिताएँ हैं। आदि में जिसने आदि सनातन धर्म की स्थापना की थी उस स्थापना करने वाले का नाम भूल जाता है, काम भूल जाता है। वो देश, वो स्थान, वो सृष्टि का कोना जहाँ से उस सत् धर्म की स्थापना की शुरुआत होती है वो सनातनधर्मियों को भूल जाता है। जनसाधारण नये–नये आने वाले धर्मों के रंग में ऐसे रंग जाते हैं कि अपनी ओरिजिनलिटी(वास्तविकता) को भूलते जाते हैं। विदेशियों और विधर्मियों की संस्कृति को पकड़ते जाते हैं। सनातन धर्म क्षीण होता जाता है। सनातन धर्म की जो आत्माएँ हैं वे कम संख्या में होती जाती हैं और दूसरे–दूसरे धर्मों का प्रभाव बढ़ता जाता है। भारत में जहाँ परमपिता–परमात्मा शिव पवित्रता की विशेषता के कारण, अव्यभिचार की विशेषता के कारण इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं। एवर प्योर सुप्रीम सोल दूसरे देशों में नहीं आता; क्योंकि वे शुरू से ही पवित्रता को महत्व नहीं देते हैं। तामसी भारतीय शरीर में प्रवेश करने के बावजूद भी, साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करने के बावजूद भी, जैसा गीता में लिखा हुआ है– वो पवित्र रहता है। गीता में जैसे बताया है कि– मुझ साधारण तन में आए हुए भगवान बाप को मूढ़मति नहीं पहचान पाते। ऐसी मूढ़मति मनुष्य आत्माएँ जन्म–जन्म द्वैत वाली नारकीय दुनियाँ में ही आकर जन्म लेती हैं। सृष्टि की जनसंख्या बढ़ती जाती है, धर्मों की संख्या बढ़ती जाती है, देशों, राज्यों की संख्या बढ़ती जाती है, अनेक मत–मतांतर फैलने से अशांति बढ़ती चली जाती है। अन्ततः कलह–क्लेश का युग, 'कलहयुग' की स्थापना हो जाती है। सब आपस में झगड़ते हैं। हर धर्म में धर्म के नाम पर वितंडावाद पैदा हो जाता है। कलियुग के अंत में परमपिता परमात्मा शिव इस सृष्टि पर अवतरित होकर इन द्वैत फैलाने वाले मानवीय धर्मों का विनाश कर देते हैं। किसके द्वारा? जो हर–हर, बम–बम मतलब पापों का हरण करने वाला है। अधर्म का हरण करने वाला है। अनेकता का हरण करने वाला है। एकता की स्थापना करने वाला परमपिता–परमात्मा शिव सारी सृष्टि पर कल्याण ही कल्याण की स्थापना कर देता है। इसलिये त्रिमूर्ति शिव कहा जाता है। उसके तीन कार्य प्रसिद्ध हैं। ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि की स्थापना। उस नई सृष्टि में हर धर्म से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्माएँ प्रवेश पाती हैं। मनन–चिंतन–मंथन करने वाली आत्माएँ प्रवेश पाती हैं। वो नई संगठन रूपी सृष्टि, "ब्राह्मण सृष्टि" कही जाती है इसलिए आज भी भक्तिमार्ग में "ब्राह्मण देवताय नमः" कहा जाता है। ब्राह्मणों की पूजा होती है। ब्राह्मण सर्वोपरि माने जाते हैं। आज के ब्राह्मण नहीं। ये उसी समय का गायन है जब कलियुग के अंत और नये युग–सतयुग के आदि में, ब्राह्मण सो देवता बने थे। जैसे और धर्मपिताएँ सौ वर्ष के अंदर अपना धर्म स्थापन करते हैं, उसी तरह ब्रह्मा की भी आयु सौ वर्ष की गिनी गई है। शास्त्रों में लिखा है इस मृत्युलोक से ब्रह्मा सौ वर्ष की आयु में समाप्त हो जाता है। वो ब्रह्मा कैसी भी समस्या कैसी भी परिस्थिति, कैसे भी वातावरण में रह कर अपने को खुश रखता है। तो उस मन, बुद्धि रूपी श्रेष्ठ आत्मा ब्रह्मा को भी अपने अंदर ही स्व शासन, आत्मा के तंत्र की अनुभूति होती है। आत्मा मतलब रूह को रूहानियत की अनुभूति होती है। ये तामसी शरीर सब दुःखों का आगार है। जिस्म के ऊपर आत्मा का कंट्रोल नष्ट हो जाता है इसलिए दुःखों की अनुभूति होती है। आत्मा अगर अपने बाप सुप्रीम सोल परमपिता–परमात्मा की स्मृति में स्थिर हो जाये तो दुनियाँ की कोई ताकत नहीं है जो किसी मनुष्य आत्मा को जो राजयोग में स्थित है जिसका गीता में वर्णन है "स्वरूप निष्ठ" उसको कोई दुःख दे सके। अशांत कर नहीं सकता। इसलिए शांति देवा का गायन है।

वो शांति देवा बाप शांति अर्थात् मुक्ति की स्थापना करने के लिए, इस सृष्टि पर मुक्ति का वर्सा देने के लिए, राजयोग सिखाने के लिए आता है। वह राजाओं का राजा बनाने वाला राजयोग सिखाता है। स्वयं फकीर बनकर रहता है। उसके चित्र फकीरी वेश में दिखाये जाते हैं। खुद बादशाह नहीं बनता; लेकिन जिनको राजयोग सिखाता है उनके दिल में बेताज बादशाह बनकर रहता है। असली नेह की रूह वो है। "नेह+रूह" जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर लंबे समय तक राज्य करता है। उसकी युगल, जो उस राजयोग के कार्य में विशेष सहयोगी बनती है। उसका नाम भी है– कमला नेहरू। कैसा जीवन बिताती है? जैसे कमल होता है, कीचड़ में रहता है। कीचड़ की दुनियाँ में रह करके भी मन–बुद्धि की सेटिंग इस तरह की ......

'बी' साइड (कैसेट)

....हो जाती है कि कीचड़ का उस मन–बुद्धि रूपी आत्मा के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। उसका सात्विक रूप "दुर्गा" के रूप में पूजा जाता है। नाम पड़ा है दुर्गा। शास्त्रों में जितने भी नाम हैं, जो प्रैक्टिकल कार्य किया है उन

कार्यों के आधार पर हैं। दुर्गा नाम पड़ा है तो ज़रूर कोई काम किया होगा। क्या काम किया होगा? दुर्गुणों को दूर करने वाली है– "दुर्गा" क्योंकि शक्तियाँ ही संहारकारिणी गाई हुई हैं जब क्रोध में आती है विकराल रूप धारण करती है तो शिव–शंकर महादेव की शक्ति महाकाली बन जाती है ।

भारत का जो पूर्वीय स्थान कलकत्ता है, उस स्थान से सुप्रीम सोल बाप मुसलमानों के आदम में, क्रिश्चियन्स के एडम में, हिन्दुओं के आदिदेव में प्रत्यक्ष होता है। जिसकी यादगार बनियन ट्री अश्वत्थ वृक्ष बनी हुई है। वह सुप्रीम सोल ज्ञान सूर्य के द्वारा, जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच का हीरो पार्टधारी है प्रत्यक्ष होता सूर्य–चन्द्रमा, पृथ्वी आदि जो नौ ग्रहों की पूजा होती है, कोई जड़ ग्रहों की पूजा नहीं होती है। कोई चैतन्य आत्माएँ हैं जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अभी भी मौजूद हैं। उनके पार्ट के आधार पर, उस श्रेष्ठता के आधार पर भारतवर्ष में वो नौ ग्रहों की पूजा आज भी होती चली आ रही है। कोई भी अनुष्ठान करेंगे, उन नौ श्रेष्ठ आत्माओं का पूजन ज़रूर करेंगे। उनमें से 8 बहुत श्रेष्ठ हैं, जिनकी पूजा अष्टदेव के रूप में होती चली आयी है। सर्वोपरि है– "ज्ञान सूर्य"। जैसे गीता में लिखा हुआ है कि यह ज्ञान मैंने सबसे पहले किसको दिया? सूर्य को दिया। तो वो ज्ञान सूर्य कोई और नहीं होता। देव–देव महादेव जिसे कहा जाता है त्रिनेत्री शिव ही ज्ञान सूर्य के रूप में भारत देश के पूर्वीय इलाक़े (कलकत्ते) से प्रत्यक्ष होता है। जहाँ से नई सृष्टि का बीजारोपण होता है। आज से 77/78 वर्ष पूर्व उस ज्ञान सूर्य आदम/एडम/आदिदेव के द्वारा अर्थात प्रजापति ब्रह्मा के द्वारा, परमात्मा शिव निराकार ज्योति ने यहाँ ही आकर ज्ञान का बीजारोपण किया, जिससे नई ब्राह्मण सृष्टि की उत्पत्ति हुई। वो स्थान यही कलकत्ता है, जहाँ गंगा देवी के गर्भ ग्रह में कपिल मुनि कहो, आदिदेव कहो, आदिनाथ कहो आज भी गंगासागर में मूर्ति के रूप में विराजमान है।

इस रहस्य को शास्त्रों से टैली करके परमात्मा के उस ज्ञान को मनुष्य आत्माएँ समझ रही हैं और बहुत जल्दी जो साइंस के साधन बने हुए हैं, उनके द्वारा समझेंगी। लास्ट में जब ये मनुष्यकृत साधन भी विनाशी साबित हो जायेंगे; क्योंकि ईश्वरकृत नहीं हैं, नैसर्गिक नहीं हैं, तब अंत में वायब्रेशन्स के द्वारा, मन्सा की एकाग्रता के द्वारा इस मानवीय सृष्टि का एक–एक मनुष्य उस सुप्रीम सोल बाप को पहचान लेगा। लेकिन ज्ञान का ये सवेरा तब होगा, जब हर मनुष्य आत्मा जागृत हो जाये और सतयुगी सवेरा लाने के लिए प्रयत्नशील बने। बूँद–बूँद से घट भरता है, जो गायन है– हरेक मनुष्य आत्मा रूपी बिंदु जब उस सुप्रीम सोल बाप को पहचानेगा, चाहे नास्तिक से नास्तिक ही क्यों न हो। ऐटमिक एनर्जी, "हर–हर, बम–बम" का जो प्रैक्टिकल नारा है, वो ऐसी क्रांति है जो सारी सृष्टि पर जब सूक्ष्म और स्थूल रूप से बरपा होती है तो नास्तिक से नास्तिक मनुष्य आत्मा को भी मानना पड़ता है कि कोई अजूबा शक्ति जिसे सर्वशक्तिमान कहा जाता है, वो इस सृष्टि पर कंट्रोल करने के लिए आई हुई है। हमारे अंदर ये पावर नहीं है कि हम अपने द्वारा, अपने हाथों से बनायी हुई चीज़– ऐटमिक एनर्जी, जिसे हमने निर्माण किया है, उसका हम विस्फोट कर सकें। मनुष्य की ताक़त नहीं। उसकी भी प्रेरणा देने के लिए उस सुप्रीम सोल को, उस ज्ञान सूर्य में प्रवेश करना पड़ता है। मनुष्यमात्र के लिए ये बहुत कठिन कार्य है जिससे सब अधर्मियों का विनाश होता है। सब आततायियों का नाश हो जाता है और एक सत् धर्म की स्थापना हो जाती है। अनेक राज्यों, देशों और धर्मों का विनाश होता है। चाहे वो कोई संसार की महान ते महान महाशक्ति ही क्यों न हो वो भी हार खा कर बैठ जाती है। वह सुप्रीम सोल शिव बाप उस ज्ञान सूर्य राम की आत्मा के द्वारा जिसका सूर्यवंशी गायन है, शास्त्रों में प्रसिद्ध है– सूर्यवंशी राम–उसके द्वारा प्रत्यक्ष होता है। उसका वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुगी नाम "देव–देव महादेव" संसार में प्रत्यक्ष होता है।

आज से 77/78 वर्ष पहले उस ज्ञान सूर्य सुप्रीम सोल शिव ने आकर ज्ञान का बीजारोपण किया था। जहाँ से इस सृष्टि की शुरूआत होती है। कलियुग के अंत में ये सृष्टि तामसी होने पर इस दुःखी सृष्टि का, कलह–क्लेश का अंत करने वाला स्थान ये कलकत्ता है। जहाँ से सारी मनुष्य सृष्टि के कलह–क्लेशों के अंत की शुरूआत होती है। इस सारी सृष्टि पर समूल क्रांति आज तक किसी ने नहीं की। जो भी धर्मपिताएँ आए, जैसे द्वैत फैलाने वाला पहला–पहला धर्मपिता 'इब्राहीम' आया, जो विधर्मियों के बीच में सबसे शक्तिशाली धर्मपिता है, जिसके अनुयाइयों ने इस सृष्टि पर ज़्यादा से ज़्यादा देशों में राजाई स्थापन कर ली; लेकिन फिर भी सारी दुनियाँ पर राजाई स्थापन नहीं कर सके। कलियुग के अंतिम सौ वर्षों में वो भी हार खाकर बैठ गए। क्रिश्चियन्स का बोल–बाला इन अन्तिम सौ वर्षों में ऐसा माया का पॉम्प एण्ड शो, ऐसी पोप लीला फैलाता है जैसा कि नाम ही है पोप, जिससे सारी मनुष्य सृष्टि चमत्कृत हो जाती है। यही मानवीय धर्म की ऊंचाई हर मनुष्य के मस्तिष्क में बैठ जाती है कि आत्मा–परमात्मा कुछ भी नहीं। यही मानवीय भौतिकवाद की सर्वोपरि शक्ति है जो मनुष्य के हाथ में कंट्रोल कर ली गई है। शास्त्रों में भी लिखा हुआ है पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि आदि देवताएँ, पाँच तत्व रूपी चैतन्य देवताएँ इस मनुष्य सृष्टि पर कोई मानवीय रूप में अभी भी हैं। पहचानने की बात है। उनको रावण ने अपनी चारपाई से बाँधकर रखा हुआ था। एक उँगली का बटन दबाता था और चारों तरफ़ रोशनी ही रोशनी। एक उँगली के इशारे से हवा, पानी, अग्नि अपना कार्य करने के लिए मजबूर हो

जाते थे। लेकिन ये पाँच तत्वों की शक्ति सर्वोपरि शक्ति नहीं है। ये प्रकृति के पाँच जड़ तत्वों को पूरा कंट्रोल करना मनुष्यों का काम नहीं हो सकता है। मनुष्य गुरुओं के द्वारा सिखायी हुई जो ज्ञान की पावर है उसका काम अधूरा है; लेकिन ये सुप्रीम सोल का काम नहीं है।

सुप्रीम सोल आकर वह पढ़ाई पढ़ाता है जिससे इस संसार में वह प्रैक्टिकल में जगत् का गुरु साबित होता है। वे जगतगुरु सिर्फ़ टाइटिल मात्र रखवाते हैं। सारा जगत् तो क्या भारतवर्ष के लोग भी उनको नहीं मानते। तो सारा जगत् 500/600 करोड़ मनुष्य सृष्टि की जो मनुष्य आत्माएँ हैं उनके गुरु कैसे कहे जा सकते हैं? गुरु के सामने तो माथा झुकाना पड़े। बुद्धि से त्राहि माम्। साष्टांग, अष्ट अंगों सहित सरेंडर कर देना पड़े। बुद्धि को झुकाना पड़े। वह सुप्रीम सोल बाप ज्ञान सूर्य देव–देव महादेव, आदिदेव के द्वारा वो कार्य कराता है जो मनुष्य धर्म पिताएँ नहीं कर सके। उन्होंने आकर अपने–अपने धर्म की अधूरी धारणाएँ सिखाईं; लेकिन जो पुरानापन है, पुरानी परंपराएँ हैं, पुरानी–पुरानी जो तामसी धारणाएँ हैं उनका विनाश नहीं करा सके। तो जब पुरानेपन का विनाश ही नहीं हुआ सिर्फ नये धर्म की शुरुआत हो गई। जैसे मकान में कहीं तोड़–फोड़ हो जाती है तो कोई रिपेयर करने वाला उसको थोप–थाप कर देता है। ऐसे ये धर्मपिताएँ टाइम टू टाइम ढाई हज़ार वर्ष के अंदर आते हैं, जिस पीरियड की मनुष्य के पास हिस्ट्री है, मनुष्य गुरुओं के पास हिस्ट्री है। वो धर्मपिताएँ आकर इस सृष्टि पर सिर्फ़ सृष्टि की रिपेयरिंग करते हैं। नई सृष्टि नहीं बना सकते। नये सत् धर्म की स्थापना नहीं कर सकते। आदि सनातन धर्म का पुनरोद्धार नहीं कर सकते। ये उद्धार करने का कार्य परमपिता–परमात्मा शिव निराकार ज्योति जिसे "सदाशिव" कहा जाता है वही ज्ञान सूर्य आकर त्रिदेव द्वारा इस सृष्टि पर वह कार्य कराता है। अनेक अधर्मों का विनाश, अनेक असत् राज्यों का विनाश और एक सद्धर्म की स्थापना।

ये असत् राज्य, असत् धर्म संसार में दुःख की शुरुआत करते हैं। इनका नारा है–"अज्ञान क़ायम रहेगा, अँधेरा कायम रहेगा"। ये आत्मा और आत्मा का बाप परमपिता परमात्मा शिव को पहचानने नहीं देते। ऐसी माया का पॉम्प एण्ड शो फैलाते हैं। ये अल्पकाल का शो है। अगर अल्पकाल का शो नहीं होता तो अटलांटिक महासागर में जो बड़मूला ट्रैंगल है उसमें जाने से वैज्ञानिक क्यों घबड़ाते हैं? उस रहस्य को क्यों नहीं समझ पाते? इस रहस्य को बताने वाली शक्ति सुप्रीम सोल है। ये अदृश्य शक्ति है। भूत, प्रेतों को वैज्ञानिक लोग नहीं जान सकते। उनकी तामसी शक्ति को नहीं जान सकते। भारतीय मनीषी अब भी ऐसे तांत्रिक हैं जो उन प्रेत आत्माओं को कंट्रोल कर लेते हैं। ये मैली विद्या भारत में थर्ड क्लास मानी जाती है। गीता में लिखा है– भूत, प्रेतों की पूजा करने वाले भूत योनि में जाकर जन्म लेते हैं। देवताओं की पूजा करने वाले देव योनि में जाकर जन्म लेते हैं और मेरी उपासना करने वाला मेरे को प्राप्त होता है मतलब सुप्रीम सोल के जो नज़दीक बैठे हैं ऐसी उप आसना अर्थात उप मतलब नज़दीक, आसन मतलब मन, बुद्धि से नज़दीक आसन मार कर बैठने वाले उपासक परमात्मा से प्राप्ति करते हैं।

इस ह्युमिनिटी का पिता आदिदेव है जिसका शास्त्रों में गायन है– "त्वम् आदिदेवः पुरुषः पुराणः।" उससे पुराना कोई मनुष्य इस सृष्टि पर नहीं होता। तामसी ते तामसी 'महाकाल' का भी पार्ट बजाता है और दुनियाँ के नये ते नये मनुष्य का भी पार्ट बजाता है जिसे कहते हैं– न्यू मैन आफ दि वर्ल्ड। तो ज़रूर कुछ ऐसा नया कार्य करता होगा। वो नया कार्य, वो अजूबा कार्य दुनियाँ में और कोई नहीं कर सकता। मनुष्य के बनाये हुए सात वंडर ऑफ दि वर्ल्ड प्रसिद्ध हैं। लेकिन परमात्मा शिव के द्वारा द ग्रेटेस्ट वंडर ऑफ दि वर्ल्ड स्थापन होता है, जिसे शास्त्रों में "वैकुंठ" कहा गया है। मुसलमानों के शास्त्रों मे उसका नाम "जन्नत" दिया गया है। अँग्रेजों में उसका नाम "पैराडाइज" दिया गया है। पैराडाइज में लॉर्ड कृष्ण का राज्य था।

"राम और कृष्ण" ये दो ही तो सर्वोपरि पार्ट बजाने वाली मनुष्य आत्माएँ हैं। इसलिए बाबा ने बोला है–"राम बाप को कहा जाता है।" कृष्ण उसका बच्चा है। नई सृष्टि के सात्विक ते सात्विक पहले पत्ते का पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मा कृष्ण है। बाप बच्चे के द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं। बच्चा जब समझदार हो जाता है तो बाप को प्रत्यक्ष करता है। इसलिए गायन है–"सन शोज़ फादर, फादर शोज़ सन।" बाप तो सर्वशक्तिवान है। वो सर्वशक्तिवान बाप आकर इस सारी मनुष्य सृष्टि में जितने भी गॉड फादर को मानने वाले आस्तिक धर्म हैं उनके बीच में जो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ आत्माएँ जिनका संगठन माला के रूप में स्मरण किया जाता है, उन माला के चैतन्य मणकों को सुप्रीम सोल बाप, सर्वशक्तिवान ही पहले प्रत्यक्ष करता है। खुद गुप्त रहता है; क्योंकि वह गुप्त पार्टधारी है। गायन भी है–"छुपा रुस्तम बाद में खुले ।" नास्तिक धर्म को छोड़ कर कोई ऐसा धर्म नहीं है जिसमें माला न घुमाई जाती हो। माला, उस सुप्रीम सोल बाप के द्वारा बनाये हुए ह्युमिनिटी के श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ संगठन की यादगार है। हर धर्म में वो माला घुमाई जाती है। माला के जो मणके हैं, हर धर्म की चुनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं के प्रतीक हैं। उन श्रेष्ठ आत्माओं को परमात्मा बाप आकर अभी इस सृष्टि में एकत्रित कर रहे हैं। सारी मनुष्य सृष्टि से ये कलेक्शन किया जा रहा है। अभी मनुष्य सृष्टि पर जो तीव्रतम साधन हैं

उनमें सबसे लेटेस्ट साधन कौन सा है? कम्प्यूटर। उस कम्प्यूटर में इंटरनेट एक ऐसा साधन है कि जब वो अपनी पूरी मशीनरी को प्राप्त कर लेगा, टीवी से पूरी रीति कनेक्ट हो जायेगा तो बड़ी तीव्रता से वो 108 सितारे जो ज्ञान की चमक मारने वाले संसार के सर्वोपरि चैतन्य सितारे हैं, वो प्रत्यक्ष हो जाएँगे। उन 108 सितारों को इस दुनियाँ का हर मनुष्य मात्र मानने के लिए मजबूर हो जायेगा। उन सितारों के द्वारा सारी दुनियाँ कंट्रोल की जायेगी।

बहुत लम्बा समय नहीं है। जैसे और धर्मों की स्थापना में ज़्यादा से ज़्यादा सौ वर्ष का पीरियड होता है। परमपिता–परमात्मा शिव भी इस सृष्टि पर आकर सनातन धर्म का कायाकल्प करने के लिए वही 100 वर्ष का पीरियड लेते हैं। सन् 1936 से इस ज्ञान यज्ञ की शुरूआत हुई थी। इसका नाम ही है– 'अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ।' रुद्र के द्वारा इसका फाउंडेशन पड़ता है। रुद्र मतलब ही रौद्र रूप धारण करने वाला। उस रौद्र रूप धारण करने वाले का जब इस सृष्टि पर अस्तित्व शुरू होता है, उस समय ज्ञान का बीजारोपण भी शुरू होता है और मनुष्य की बुद्धि में ऐटमिक एनर्जी की शुरूआत भी हो जाती है। सन् 1936 से पहले ऐटमिक एनर्जी का नाम–निशान भी इस सृष्टि पर नहीं था। 9/10 वर्षों के अंदर पहली बार ऐटमिक एनर्जी का वो सैम्पल हीरोशिमा और नागासाक़ी के ऊपर विस्फोट किया गया। वो पहला विस्फोट बहुत छोटा सा रूप था। 20–20 मेगा वॉट मात्र की दो बम्बियाँ थीं, जो द्वितीय विश्वयुद्ध में प्रयोग की गयी थीं। अभी 100 वर्ष पूरे नहीं हुए हैं। दुनियाँ में दो विश्वयुद्ध हो चुके। तो क्या तीसरा विश्वयुद्ध नहीं हो सकता? और अगर तीसरा विश्वयुद्ध छिड़ गया, एक बार किसी भी देश ने जिसके पास ऐटमिक एनर्जी है उसने प्रयोग कर दिया तो दूसरे देश चुप नहीं बैठेंगे। विश्वयुद्ध की घोषणा हो जायेगी; लेकिन मनुष्यों को पता नहीं है– दुनियाँ के बड़े–बड़े ज्योतिषियों ने 300–400 वर्ष पहले से ही 2000 के लिए लास्ट विश्वयुद्ध की घोषणा की हुई थी। वो लास्ट विश्वयुद्ध ऐटमिक विस्फोट का युद्ध नहीं होगा। ये भारत के अंदर विधर्मियों, विदेशियों ने जो अनेकता फैलायी हुई है उस अनेकता को समाप्त करके एकता स्थापन करने के लिए ये युद्ध होगा। जिसका नाम शास्त्रों में पड़ा हुआ है– महाभारी–महाभारत गृहयुद्ध। घर–गृहस्थ के अंदर की लड़ाई है। भारत के ही दो भाइयों की लड़ाई है। कौन–कौन से भाई? कौरव और पांडव। पाण्डवों की संख्या पाँच उँगलियों पर गिने जाने योग्य है। कौरव कितने दिखाये गये हैं? सौ। सौ कौरवों माना सिर्फ सौ नहीं हैं। सौ तो रावण की माला के भी आततायी मणके हैं। उन चैतन्य मणकों के द्वारा महाभारी–महाभारत गृहयुद्ध का भी उद्‌घोष होता है। उनका दूसरा नाम 'कीचक' दे दिया है। उनकी संख्या भी सौ दिखाई गई है। कीचक माना डर्टी ब्रूट्स जो लंपट का पार्ट बजाते हैं। परायी स्त्री, परायी कन्याओं, माताओं के ऊपर दुष्ट युद्ध का विस्फोट करके उनको व्यभिचारी वेश्या बनाते हैं। आज भी भारत से विदेशों में कन्याएँ जा रही हैं। खरीद–खरीद कर ले जाते हैं। उनसे वेश्या वृत्ति कराई जा रही है। भारत की सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी हुई है। भारत की सर्वोपरि शक्ति है– प्योरिटी। भारतीय परंपरा में आज भी प्रति परिवार में कन्याओं की कितनी सुरक्षा की जाती है। जो जाने–माने धर्म गुरु कहे जाते हैं, जगद्‌गुरु शंकराचार्य कहे जाते हैं वे भी उन कन्याओं का पूजन करते हैं, माथा टेकते हैं। ऐसी वो शिव शक्तियाँ, भारत में ऐसी परंपरा से भरी पूरी रही हैं कि उनकी प्योरिटी के ऊपर विशेष बल दिया जाता रहा। आज भारत की सरकार ऐसी नपुंसक हो गयी है कि उन ह्यूमन गऊओं की रक्षा नहीं कर सकती।

इसलिए उस कृष्ण की सोल को, गौपाल कन्हैया कृष्ण को इस सृष्टि पर प्रत्यक्ष होना पड़ता है। जो गोपाल कन्हैया हीरोइन का पार्ट बजाने वाली आत्मा है। हीरो– राम और हीरोइन– कृष्ण। राम की सोल है– पिता का सख्त पार्ट बजाने वाली और कृष्ण की सोल है– मृदुल पार्ट बजाने वाली। गऊओं को रक्षण देने वाली। उन्होंने तो समझ लिया–जानवर गऊएँ, तो गऊ हत्या के लिए आंदोलन करते रहते हैं। उससे कुछ होने वाला नहीं है। जो असली कार्य संपन्न होना है वो अभी होने जा रहा है। उसके मुख्य प्रतिनिधि हैं तीन। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। ये तीन चोले हैं, शरीर रूपी तीन वस्त्र, जिनकी यादगार में आज भी भारत में तिरंगा झंडा लहराया जाता है। वो तो बड़े प्यार से सिर्फ़ गीत गाते रहते हैं– "विश्वविजय करके दिखलावे तब होवे प्रण पूर्ण हमारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा।" सारी सृष्टि के बीच में, ह्युमिनिटी के बीच में, हर देश के बीच में अपना झंडा बुलंद करना चाहते हैं। अरे! कपड़े का झंडा विश्वविजय करके दिखलायेगा क्या? कपड़े के झंडे ने कभी और भी विश्वविजय की थी? ये शरीर रूपी तीन वस्त्र हैं। शरीर रूपी तीन वस्त्र थे जिन्होंने इस मानवीय सृष्टि पर आकर सारी सृष्टि पर सुख–शांति की स्थापना की थी। इन तीन शरीर रूपी वस्त्रों का, ब्रह्मा–विष्णु–शंकर के प्रैक्टिकल पार्ट–धारियों के पार्ट को समझ कर उनका श्रेष्ठ कर्तव्य संसार में बुलंद करने का– ये विशेष झंडारोहण का पुनीत कार्य भारतवासी आत्माओं को करना है।

अति श्रेष्ठ भारतवासी आत्माएँ अंतिम जन्म में हर धर्म से चुनी गई हैं और भारत में अभी संगठित होकर गुप्त रूप में पांडवों का पार्ट बजा रही हैं। पांडव गुप्त हो कर घूमते थे। उन्होंने लंबे समय तक गुप्त वास किया। कहाँ? काम्पिल्य नगर में। कपिल मुनि की स्थापन की हुई वो काम्पिल्य नगरी आज भी शास्त्रों में विख्यात है। वर्षों से ये पांडवों का गुप्त कार्य वहाँ चल रहा है। जब वो कार्य सामान्य रूप से परिपक्वता को पाता है तो कलकत्ते से आकर

उसकी प्रत्यक्षता की शुरुआत होती है। ज्ञान सूर्य कपिल मुनि ही इस सृष्टि पर पहला–पहला पदार्पण कर कलकत्ते से उस कार्य की शुरुआत करता है। कार्य की शुरुआत होती है तो जो मनीषी शक्तियाँ हैं, तीन देवताएँ ही मनीषी नहीं हैं, तीन शक्तियाँ भी हैं विशेष। जिनका नाम पड़ता है– 'गायत्री।' कौन सा मंत्र है, जो भारत का प्रसिद्ध मंत्र है? 'गायत्री मंत्र।' तो उन तीन देवियों ने कोई विशेष कार्य किया होगा। उन तीन देवियों को तीन नदियों के रूप में आज भी माना जाता है। गंगा, यमुना और सरस्वती। उनमें 'गंगा' सर्वोपरि मानी गई है। जब ज्ञान गंगा का अवतरण होता है तो सारी सृष्टि पर ज्ञान जल की बौछार के द्वारा गंगा ही पवित्रता का वायब्रेशन फैलाने में सहयोगी बनती है। किसकी सहयोगी बनती है? विष्णु की सहयोगी बनती है? विष्णु के चरणों में वास करती है; लेकिन मानवीय सृष्टि का कल्याण करने में सहयोगी नहीं बनती। सहयोगी कब बनती है? जब वो ज्ञान गंगा विष्णु के चरणों से निकलकर, ब्रह्मा के बुद्धिरूपी कमंडल से निकलकर शंकर के मस्तिष्क में प्रवेश कर जाती है जिसकी यादगार शंकर के चित्रों में जटाओं में कन्या का रूप दिखाया गया है। तो भी लोग नहीं समझ सकते हैं कि वो गंगा जड़ रही होगी या चैतन्य रही होगी? वह सरस्वती/यमुना नदी जड़ रही होगी या चैतन्य रही होगी? जो सूर्यपुत्री कही जाती है वह ज़रुर चैतन्य रही होगी? बड़े–बड़े मनीषी, विद्वान इन रहस्यों को समझ नहीं सके। क्योंकि गायन है– "या समझे कवि या समझे रवि"। वह परमपिता–परमात्मा ही इस सृष्टि पर जब ज्ञान सूर्य के द्वारा प्रत्यक्ष होता है तब ही जो प्राचीन–प्राचीन मनीषी, कवि हुए हैं, उनके द्वारा की हुई कविता जो रहस्यमयी कविता है, अलंकारिक कविता है, प्रतीकात्मक कविता है, उस कविता के रहस्यों का उद्‌घाटन होता है। वो उद्‌घाटन ज्ञान सूर्य के द्वारा ही होता है। विकारी मनुष्य उन रहस्यों का उद्‌घाटन नहीं कर सकता।

वह ज्ञान सूर्य शिव इस सृष्टि पर आ चुका है। आकर अपना कार्य कर रहा है। जिन आत्माओं के बीच में उसकी प्रत्यक्षता हो रही है, वो आत्माएँ बड़ी महान हैं। बहुत श्रेष्ठ भाग्यशाली आत्माएँ हैं। जिनको अपने भाग्य का इतना नशा चढ़ा हुआ है कि उनके पास इतना धन भी नहीं है। तन की, स्वास्थ्य की इतनी शक्ति भी नहीं है। बूढ़ी–बूढ़ी अबला माताएँ हैं। उनकी संख्या में ही जास्ती वृद्धि दिखायी देती है। ऐसी अबलाओं कन्याओं, वृद्धा माताओं के द्वारा, बांधेलियों के द्वारा वो परमात्मा शिव आकर सृष्टि का आधार मूर्त कार्य कराता है। अपनी शक्ति को शिव शक्तियों के रूप में प्रत्यक्ष करता है। स्वयं प्रत्यक्ष नहीं होता। इसलिए गीत तो गाते हैं– "सबको नाच नचाने वाला, ऐसी सृष्टि को रचाने वाला कौन है?" लेकिन समझ नहीं सकते। हम सभी बच्चे बहुत धन्य–धन्य आत्माएँ हैं जो इन गूढ़, गुह्य रहस्यों को समझ रहे हैं और समझने के बाद प्रयास कर रहे हैं कि इस मनुष्य सृष्टि की हर मनुष्य आत्मा उस कल्याणकारी ज्ञान को प्राप्त कर ले। क्योंकि पहले ज्ञान दाता आता है या पहले ज्ञान आता है? (ज्ञानदाता) नहीं। पहले मनुष्य की बुद्धि में ज्ञान प्रत्यक्ष होता है। उस ज्ञान के द्वारा, जानकारी के द्वारा, वेद वाणी के द्वारा मनुष्य सृष्टि, उस ज्ञान सागर बाप को पहचानती है। तो ये नदियों के मिलन से, अथक प्रयास से, जिसे भागीरथी प्रयास कहा जाता है, गंगा सागर का मेला भारत वर्ष में वर्ष का अंतिम मेला, सर्वोपरि मेला मनाया जाता है। स्थूल मेले की बात नहीं है जिसमें सिर्फ़ जड़ नदियाँ मिलती हैं। वो चैतन्य नदियों के मिलन मेले की यादगार है। ऐसे नहीं कि एक बार संगठन में बैठ गये ...... गंगा सागर का मेला संसार के सामने प्रत्यक्ष हो जायेगा अथवा वो नदियाँ प्रत्यक्ष हो जाएँगी अथवा वो सागर प्रत्यक्ष हो जायेगा, इसके लिए बार–बार अथक प्रयास करना पड़ेगा। भागीरथ के साथ–साथ जो भाग्यशाली बच्चे हैं, सौभाग्यशाली नहीं, पद्‌मापद्‌म भाग्यशाली हैं, उन बच्चों को अथक प्रयत्न करना पड़ेगा। तब वो अंतिम आहुति पड़ेगी। उस अंतिम आहुति में जो ब्राह्मणों की दुनियाँ है, जिन ब्राह्मणों के लिए शास्त्रों में गाया हुआ है – दो प्रकार के ब्राह्मण प्रसिद्ध हैं। रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद जैसे आततायी ब्राह्मण भी ब्रह्मा की औलाद थे और गुरु वसिष्ठ और विश्वामित्र जैसे पुरुषार्थी ब्राह्मण भी थे–उन दोनों के बीच जो वायब्रेशन का युद्ध है, जो ज्ञान का वाक् युद्ध है, मत–मतांतर का युद्ध है, वो पहले संपन्न होता है। यह सूक्ष्म गृहयुद्ध अभी भी चल रहा है। ये अंदरूनी ज्ञान की भाषा है जिसको पहले हम ब्रह्मा की प्रैक्टीकल औलाद ब्राह्मण बच्चों को अंदर–अंदर अच्छी तरह समझना पड़ेगा। इसलिए पहले घर का सुधार फिर पर का सुधार। हमारा कॉन्संट्रेशन बहिर्मुखी दुनियाँ में नहीं होना चाहिए। अंतर्मुखी होना चाहिए। जो ज्ञान सूर्य के डाइरैक्ट बच्चे हैं, वो ही इस अंतर्मन में चल रहे उस युद्ध को, जो अंतिम विश्व युद्ध होगा, आध्यात्मिक युद्ध होगा–समझ सकेंगे और उस युद्ध में कूद करके, युद्ध करके अपनी अनेक जन्मों की राजाई प्राप्त करेंगे। दुष्ट वायब्रेशन्स के द्वारा ये प्राप्ति नहीं हो सकती। राजयोग की प्राप्ति सिर्फ पॉजिटिव वायब्रेशन्स के द्वारा ही हो सकती है। कोई भी आत्मा के प्रति अगर निगेटिव संकल्प चलाया तो उसे विश्व–कल्याणकारी बाप का विश्व–कल्याणकारी बच्चा नहीं कहा जा सकता। **ओमशांति।**